मास्को में निवास के अनुभव (1986–1993) और रूसी साहित्य का गुजराती में अनुवाद

लेखिका: श्रुति शाह
वे दिन उथल-पुथल भरे लेकिन सुखद थे। मेरे पति राजीव (शाह) जनवरी 1986 के अंत में मास्को के लिए रवाना हुए थे। उन्हें स्वतंत्रता सेनानी अरुणा आसफ अली द्वारा संचालित वामपंथी झुकाव वाले समाचार पत्र 'पैट्रियट' और साप्ताहिक 'लिंक' के संवाददाता के रूप में नियुक्त किया गया था। फरवरी के अंत में, उन्हें एक पत्रकार के रूप में सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव की उपस्थिति में सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की उच्च स्तरीय कांग्रेस में भाग लेना और उसकी रिपोर्टिंग करनी थी। उस समय, मैं दिल्ली के एक सरकारी स्कूल में लाइब्रेरियन के रूप में काम करती थी और मेरी बेटी डेढ़ साल की थी। जाने से पहले, राजीव ने मुझे विश्वास के साथ आश्वासन दिया था कि मुझे रूस का वीज़ा मिल जाएगा। बस इतना ही।

अप्रैल 1986 की शुरुआत में, मैं अपनी बेटी हिना के साथ मास्को पहुँची। हवाई अड्डे की सुरक्षा जाँच से बाहर आने के बाद, राजीव और उनके एक छात्र मित्र, गौतम सरकार, हमें लेने के लिए वहाँ मौजूद थे। राजीव हमारे लिए गर्म कपड़े लाए थे; उन्हें पहनने के बाद, हम पिघलती बर्फ के बीच एक टैक्सी में बैठ गए। मास्को में, बर्फ नवंबर से जमा होनी शुरू हो जाती है और मई से पहले पूरी तरह नहीं पिघलती। मैंने अपने सपनों में भी इतनी बर्फ की कल्पना नहीं की थी।

सुनसान उपनगरों से गुजरते हुए, हम लगभग डेढ़ घंटे के बाद शहर के मध्य में स्थित 'पैट्रियट' के फ्लैट पर पहुँचे। यह फ्लैट सोवियत सरकार द्वारा समाचार पत्र को आवंटित किया गया था। विदेशी एन्क्लेव के भीतर विदेशियों के फ्लैटों के विपरीत, हमारा फ्लैट एक रूसी पड़ोस में था—छोटी नदी याउज़ा (Yauza) के तट पर, क्रेमलिन से तीन किलोमीटर की दूरी पर। पता था: 52 उलित्सा चकालोवा (उलित्सा का अर्थ है सड़क; चकालोव 1930 के दशक के एक प्रसिद्ध रूसी विमान चालक थे)।

पाँचवीं मंज़िल पर स्थित इस फ्लैट में तीन बेडरूम और एक लिविंग रूम था। रूसी मानकों के अनुसार, यह काफी आरामदायक और बड़ा था। राजीव ने एक कमरे को ऑफिस में बदल दिया। उस समय हम दोनों में से कोई भी रूसी भाषा नहीं जानता था। इसलिए हम एक छोटा अंग्रेजी-रूसी शब्दकोश लेकर खरीदारी करने जाते और दुकानदारों को यह समझाने की कोशिश करते कि हमें क्या चाहिए।

'पैट्रियट' का संवाददाता होने का सबसे बड़ा फायदा यह था कि सोवियत प्रचार संगठन एपीएन (एजेंसी पेचाती नोवोस्ती) के अधिकारी इसके संवाददाताओं की मदद के लिए हमेशा तैयार रहते थे। उस समय वहाँ बहुत कम भारतीय रहते थे। उनमें से कुछ ने मुझे बताया कि 'रादुगा' (Raduga), जो सोवियत साहित्य का विदेशी भाषाओं में अनुवाद करने वाला एक प्रकाशन गृह था, एक गुजराती अनुवादक की तलाश में है। राजीव ने एपीएन अधिकारियों से संपर्क किया, जिन्होंने बदले में रादुगा से संपर्क किया।

रादुगा विदेशी भाषाओं में सोवियत साहित्य प्रकाशित करता था। 'प्रोग्रेस पब्लिशर्स' (गुजराती में प्रगति प्रकाशन), जिसके गुजराती अनुवादक अतुल सवानी थे, मुख्य रूप से मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन की पुस्तकें प्रकाशित करता था जिन्हें सोवियत नेतृत्व पसंद करता था।

रादुगा के रूसी कर्मचारियों में तीन लोग ऐसे थे जो थोड़ी-बहुत गुजराती जानते थे। उन्होंने मुझे पहले अंग्रेजी-से-गुजराती का काम दिया। मैंने इसे आसानी से कर लिया और मेरे नाम को तुरंत मंजूरी मिल गई। इस प्रकार, मास्को पहुँचने के तीन महीने से भी कम समय में, मैंने रूसी साहित्य का अनुवाद करना शुरू कर दिया।

मुझे रूसी सिखाने के लिए, रादुगा ने एक शिक्षिका नियुक्त की: येलेना व्लादिमीरोवना। वह मास्को के पीपुल्स यूनिवर्सिटी की सेवानिवृत्त प्रोफेसर और रूसी और फ्रांसीसी भाषा की विद्वान थीं। वह अंग्रेजी नहीं जानती थीं, और गुजराती का तो सवाल ही नहीं उठता था। उनके पढ़ाने का तरीका इशारों, चित्रों और रूसी में रोजमर्रा की वस्तुओं

की पहचान के माध्यम से था। यह अनौपचारिक तरीका मुझे बहुत पसंद आया और मैंने जल्दी सीख लिया।

जल्द ही मैंने रूसी में साहित्य पढ़ना और रूसियों से उनकी भाषा में बात करना शुरू कर दिया। खरीदारी भी आसान हो गई। रूसी दुकानों में अधिकांश कर्मचारी महिलाएँ थीं; वे एक भारतीय महिला और उसकी छोटी बेटी को देखकर बहुत खुश होती थीं और चीज़ें चुनने में हमारी मदद करती थीं। "ज़द्रास्तवुयते" (नमस्ते) कहकर उनका अभिवादन करते हुए, मैं अपनी ज़रूरत की चीज़ माँगती थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि दैनिक उपयोग की कई वस्तुएँ उपलब्ध नहीं थीं। वे क्षमा मांगते हुए कहते, "इज़्विनिते, एतो नेत" (क्षमा करें, यह चीज़ यहाँ नहीं है)। साल के आठ महीनों तक कई सब्जियाँ उपलब्ध नहीं होती थीं, इसलिए जब भी उपलब्ध होतीं, हम उन्हें थोक में खरीदकर फ्रीज़र में रख लेते थे। केवल प्याज, आलू, पत्तागोभी और सेब लगभग हमेशा उपलब्ध रहते थे, हालाँकि उन्हें भी सावधानी से चुनना पड़ता था।

रूसी से सीधे गुजराती में अनुवाद करने में मुझे लगभग छह महीने लगे। मैंने बच्चों की किताबों के अनुवाद से शुरुआत की। येलेना अक्सर मुझे पढ़ाई के लिए घर बुलाती थीं और मुझे वाइन सहित बेहतरीन घरेलू रूसी व्यंजनों का स्वाद चखाती थीं। जब वह हमारे फ्लैट पर आतीं, तो मैं उन्हें मसालेदार गुजराती चाय पिलाती। हँसते हुए वह कहतीं, "यह वोदका जितनी स्ट्रॉन्ग है।"

उससे भी बढ़कर, जिस व्यक्ति ने रूसी भाषा और संस्कृति सीखने में मेरी सबसे अधिक मदद की, वह थीं ल्यूडमिला वासिलीवना। वह रादुगा की गुजराती संपादक थीं। अपनी गुजराती सुधारने के लिए उत्सुक, वह अक्सर हमारे घर आती थीं और हमें अपने घर आमंत्रित करती थीं, वे खुलकर गुजराती में बात करतीं जबकि मैं उनसे रूसी सीखती थी। उन्होंने अहमदाबाद के गुजरात विद्यापीठ में समय बिताया था, जहाँ हर कोई उन्हें ल्यूदमिलाबेन कहता था। उन्होंने हमारी बेटी हिना को पास की नर्सरी (क्रेच) और बाद में एक अंग्रेजी स्कूल में दाखिला दिलाने में मदद की। हिना को दोनों जगह बहुत पसंद आईं। वह क्रेच में अपने दूसरे दिन से ही बस गई और जब हम उसे लेने जाते तो उसने घर आने से इनकार कर दिया। उसने वहाँ कला और संगीत सीखा, जो रुचियाँ आज भी उसके पास हैं। वह आज भी वायलिन बजाती और सिखाती है। उसकी पहली भाषा न तो गुजराती थी और न ही अंग्रेजी—वह रूसी थी।

ल्यूदमिलाबेन इतनी उदार थीं कि जब भी कोई मेडिकल समस्या होती, वह हमारे साथ रुकतीं और ज़रूरत पड़ने पर डॉक्टरों को फोन करतीं। वह वास्तव में परिवार की सदस्य बन गई थीं।

उस समय मास्को में बहुत कम गुजराती थे। हम मज़ाक में कहते थे, "मास्को में केवल ढाई गुजराती परिवार हैं।" राजीव और मैं "पूर्ण गुजराती" परिवार थे। फिर प्रोग्रेस पब्लिशर्स के अनुवादक अतुल सवानी थे। गुजरात और गुजराती के प्रति उनका प्रेम अद्भुत था। उन्होंने गुजराती अनुवाद में फारसी और संस्कृत तत्वों को स्वतंत्र रूप से मिलाने का पुरजोर समर्थन किया। उनकी पत्नी कुदसियाबेन थीं। उनका फ्लैट हमारे फ्लैट से लगभग 30 किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिमी उपनगर 'यूगो-ज़ापदनया' (Yugo-Zapadnaya) में एक चौदह मंज़िला अपार्टमेंट परिसर में था, जहाँ प्रोग्रेस और रादुगा के अधिकांश भारतीय रहते थे। हम मेट्रो से एक घंटे से भी कम समय में उनके घर पहुँच सकते थे।

दूसरा "पूर्ण गुजराती" परिवार पास ही था—अहमदाबाद के धनंजय व्यास का परिवार, जो रेडियो मास्को के लिए काम करते थे। हमारे आने के कुछ महीने बाद वे भारत लौट आए। उनकी जगह चंद्रकांत व्यास आए, वे भी जल्दी लौट गए।

गुजराती परिवारों के अलावा, राजीव ज्यादातर रूसी अधिकारियों, विद्वानों और भारतीय राजनयिकों के साथ बातचीत करते थे। रूसी अधिकारी और विद्वान अक्सर अन्य एजेंसियों के लिए काम करने वाले भारतीय पत्रकारों—सुरेंद्र कुमार, के.पी.एस. गुप्ता, विनय कुमार, वी.एस. कर्णिक—के साथ हमारे यहाँ छोटी सभाओं में शामिल होते थे। रूसियों को भारतीय खाना पसंद था। मेरी शिक्षिका की तरह, उन्हें भी हमारी "वोदका जैसी स्ट्रॉन्ग" मसालेदार चाय पसंद थी।

मैंने लगभग छह साल तक रूसी अनुवादक के रूप में काम किया। हमारे पास रूस के भीतर ही सारी रूबल कमाई

खर्च करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था क्योंकि उन्हें किसी अन्य मुद्रा में नहीं बदला जा सकता था। उस समय आवश्यक सेवाओं सहित सब कुछ बेहद सस्ता था। इसलिए हमने अपनी अधिकांश कमाई सर्दियों में बर्फीले मास्को में घूमने और रेस्तरां जाने में खर्च की। दूसरा फायदा यह था कि हमने ट्रेन से तीन बार यूरोप की यात्रा की—एक बार जर्मनी के रास्ते लंदन और दो बार स्वीडन।

अपने अनुवाद कार्य के बारे में: मैंने अपना अधिकांश समय रूसी सीखने में बिताया। मैं अपनी संपादक और शिक्षिका के साथ रूसी फिल्में, नाटक, ओपेरा, बैले और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में जाती थी; इससे मुझे समाज और संस्कृति को समझने में बहुत मदद मिली, जिसने बदले में मेरे अनुवाद में मदद की।

शुरुआत में मैंने अंग्रेजी से अनुवाद किया—गोगोल के नाटक और चेखव की लघु कहानियाँ। जल्द ही मैंने रूसी-अंग्रेजी शब्दकोश की मदद से सीधे रूसी से अनुवाद करना शुरू कर दिया, क्योंकि तब कोई रूसी-गुजराती शब्दकोश मौजूद नहीं था।

संपादक ल्यूदमिलाबेन के अलावा, नात्स्या और साशा ने मेरे अनुवादों को तैयार करने पर काम किया। मैं एक हस्तलिखित मसौदा सौंपती थी, नात्स्या उसे बड़े अक्षरों में कॉपी करती थीं—हालाँकि वह गुजराती नहीं जानती थीं। फिर उस कॉपी को संपादित और मुद्रित किया जाता था। पहले प्रूफ़ साशा और ल्यूदमिलाबेन द्वारा संपादित किए जाते थे, अंतिम प्रूफ़ मेरे पास आते थे।

मेरी आखिरी अनूदित पुस्तक साइबेरिया में इरकुत्स्क के एक शीर्ष पर्यावरणविद् और पुरस्कार विजेता लेखक द्वारा लिखित 'झिवी ई पोमनी' (Zhivi i Pomni - याद रखो और जियो) थी। यह कभी प्रकाशित नहीं हुई। इसके साथ ही, मैंने समकालीन रूसी लघु कहानियों का सीधे रूसी से अनुवाद किया क्योंकि कोई अंग्रेजी अनुवाद उपलब्ध नहीं था। गोगोल, चेखव और टॉल्स्टॉय जैसे क्लासिक्स का सीधे रूसी से अनुवाद करना कठिन था, लेकिन उनके अंग्रेजी संस्करण मौजूद थे, जिससे मदद मिली।

अपने कार्यकाल के दौरान, मैंने लगभग तीस पुस्तकों—बच्चों की किताबों, उपन्यासों और लघु उपन्यासों का अनुवाद किया। रादुगा ने लगभग बीस प्रकाशित कीं। गुजराती विभाग बंद होने के कारण शेष अप्रकाशित रह गईं। सभी मेरे मायके के नाम, श्रुति मेहता, के तहत प्रकाशित हुए थे। मेरे पास पांच अप्रकाशित कार्यों की प्रिंट प्रतियां हैं; अन्य प्रतियों को कथित तौर पर हटा दिया गया था। 1992 में, मैंने दागिस्तान के प्रसिद्ध कवि रसूल गमज़तोव के एक उपन्यास का अनुवाद करने की योजना बनाई थी, लेकिन वह साकार नहीं हो सका। राजीव ने मेरी जीवित बची हुई प्रकाशित और अप्रकाशित पुस्तकों को स्कैन किया है और उन्हें ब्लॉग https://saankal.blogspot.com/ पर अपलोड किया है, जहाँ से उन्हें डाउनलोड किया जा सकता है।

मास्को में मेरा गुजराती काम रादुगा तक ही सीमित नहीं था। मैंने कुछ समय तक रेडियो मास्को में गुजराती समाचार वाचक के रूप में भी काम किया। वहाँ मेरी मुलाकात एक रूसी महिला, ल्युबोव विक्टोरोवना से हुई, जिन्होंने गुजराती जानने का दावा किया था। वह बहुत कम जानती थीं, लेकिन समाचारों का गुजराती में अनुवाद करती थीं और उन्हें प्रसारित करती थीं। मुझे यकीन है कि रूसियों को अनुवाद की गुणवत्ता की परवाह नहीं थी। मुझे रेडियो मास्को की इमारत में स्वतंत्र रूप से प्रवेश करने के लिए एक पास दिया गया था।

ल्युबोव विक्टोरोवना सत्ता के करीब लगती थीं। उन्होंने एक रूसी-गुजराती शब्दकोश बनाने का फैसला किया—शायद अपने बॉस को प्रभावित करने के लिए। मूल्यांकन के लिए एक मसौदा मेरे पास और चंद्रकांत व्यास के पास पहुँचा। मेरी रिपोर्ट कड़ी आलोचनात्मक थी। इसमें वर्तनी और कई अन्य त्रुटियां थीं। उदाहरण के लिए, "लकड़ी" को "लकरी" के रूप में छापा गया था, क्योंकि रूसी में 'd' (ड़) अक्षर की कमी है और वे 'r' (र) का उपयोग करते हैं। पूरा शब्दकोश ऐसी गलतियों से भरा था। मैंने लिखा कि इसे उचित सुधार के बिना प्रकाशित नहीं किया जाना चाहिए। फिर भी, इसे बिना बदलाव के छाप दिया गया। गुणवत्ता की किसी को परवाह नहीं थी। "कुछ न होने से कुछ होना बेहतर है" वाली भावना हावी लग रही थी। सोवियत संघ के पतन के समय ऐसी ही उदासीनता थी।

इसके अलावा, मैंने छह महीने तक सोवियत वृत्तचित्र फिल्मों के गुजराती संस्करणों को आवाज़ दी और गुजराती से रूसी में अनुवाद करने में ल्यूदमिलाबेन की मदद की। रूसी दोस्तों के साथ, मैं अक्सर सिनेमाघरों में हिंदी फिल्में

देखने जाती थी—जो सभी रूसी में डब होती थीं। मुझे 'प्रेम रोग' देखना याद है; दर्शकों में बैठी बूढ़ी औरतें दुखद दृश्यों पर रोती थीं, जिससे मैं हैरान रह जाती थी। मेरे दोस्त पूछते थे, "क्या भारत में लड़के और लड़कियां वास्तव में प्यार होने पर गाते और नाचते हैं?" उन्हें राज कपूर और मिथुन चक्रवर्ती की फिल्में पसंद थीं और वे उन्हें देखने के लिए उत्सुक रहते थे। कई लोगों को 'मेरा जूता है जापानी' गाना जुबानी याद था।

रादुगा में मेरा समय बहुत सुखद था। कई भारतीय भाषाओं के अनुवादक वहाँ और प्रोग्रेस में काम करते थे। हम अक्सर साथ में पिकनिक पर जाते थे। हम रादुगा की पार्टियों में बहुत बातचीत करते थे। अक्सर, कर्मचारियों को एक सप्ताह के भ्रमण पर ले जाया जाता था। ल्यूदमिलाबेन खुद मुझे लेनिनग्राद (अब सेंट पीटर्सबर्ग) और कीव (अब युद्धग्रस्त यूक्रेन की राजधानी) ले गईं। लेनिनग्राद में हम उनकी माँ के फ्लैट में रुके; कीव में, छह दिनों तक एक स्थानीय परिवार के साथ। एक दिन वे मुझे प्राचीन संतों के शरीरों से भरी एक गुफा में ले गए। उनका मानना था कि पवित्र आत्माएं शरीरों को सड़ने से रोकती हैं।

1991 में, गोर्बाचेव को उखाड़ फेंकने के उद्देश्य से किए गए कुख्यात अगस्त तख्तापलट के दौरान, मैं रादुगा में काम कर रही थी। जब मेरे बेटे अंकुर का जन्म हुआ, तो मुझे एक प्रतिष्ठित प्रसूति अस्पताल में चिकित्सा सेवा मिली—पूरी तरह से मुफ्त। उसके बाद का समय राजनीतिक उथल-पुथल से भरा था। रोटी सहित आवश्यक वस्तुओं की भारी किल्लत हो गई थी। हमें दूध खरीदने के लिए लंबी कतारों में खड़ा होना पड़ता था। बच्चों के लिए विशेष दुकानों में अंकुर के लिए बेबी फूड का स्टॉक रहता था, लेकिन मात्रा सीमित थी और हमें इसे रोजाना लेना पड़ता था। मैं अक्सर खरीदारी के लिए जाती थी जबकि राजीव बच्चों की देखभाल करते थे। हिना स्कूल में थी और अंकुर घर पर था। मैं कई दुकानों पर जाने के बाद, लगभग पंद्रह किलो ज़रूरत के सामान से लदी ट्रॉली खींचते हुए लौटती थी। हमारा घर नहीं बदला लेकिन उसका पता बदल गया: उलित्सा चकालोवा अपने पुराने नाम, ज़िमल्यानोई वाल (Zimlyanoi Val) में वापस आ गई।

सोवियत संघ और रादुगा के पतन के बाद, हम अप्रैल 1993 में वापस लौट आए। अराजकता के बीच, प्रकाशन गृह ने हमारा सामान पैक करने में मदद की और छोटे अंकुर सहित पूरे परिवार के टिकटों का भुगतान किया। रूस में बिताया गया वह समय, अपने उतार-चढ़ाव के बावजूद, मेरे लिए अविस्मरणीय है।

—

यह «सार्थक जलसो» में प्रकाशित मूल गुजराती लेख का हिंदी अनुवाद है।